DOI: 10.51220/hjssh.v2i1.9

Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities, Vol 2 pp. 67-78, 2007

इतिहासविद डॉ० शिवप्रसाद डबराल के साहित्य सृजन में मुखरित राष्ट्रीयता की भावना

मंजुला जुगरान

इतिहास विभाग हे०न०ब० गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर, पौड़ी

ABSTRACT

डॉ शिवप्रसाद डवराल उत्तराखण्ड के प्रमुख इतिहासविद् हुए है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ० डवराल ने अलकनन्दा उपत्यका, उत्तराखण्ड के पशुचारक, उत्तराखण्ड के भोटान्तिक तथा उत्तराखण्ड का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास लिखकर उत्तराखण्ड के प्रति अपने अनन्य प्रेम को दर्शाया है। प्रस्तुत शोध पत्र में उनके साहित्य सृजन में मुखरित राष्ट्रीयता की भावना को प्रदर्शित करने का प्रमाण दिया गया है।

Key words :- Dr. S.P. Dabrad, Nationality in his literature.

इतिहास की प्रगति में साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। साहित्य केवल कवियों की कल्पना या भावुकता नहीं होती, इतिहास के साक्ष्य जो कई बार ग्रन्थों में नहीं मिल पाते, साहित्य के काव्य, नाटकों में पाये जाते है[१]। गोर्की के अनुसार एक लेखक सर्वप्रथम अपने समय की उत्पत्ति होता है। वह अपने काल की घटनाओं को स्वयं दुखता हैं और उसमें भाग लेता है[२]। नागाधिराज हिमालय के अंचल में बसी गढ़भूमि ऐसे ही महापुरुषों की साधना स्थली रही है। यहां की भूमि केवल,वीरों, शहीदों को ही उजागर नहीं करती अपितु अनेक ज्ञात एवं अज्ञात ऐसे सरस्वती पुत्रों की जननी रही है जिन्होंने अपने जीवन को इतिहास एवँ साहित्य साधना के लिए समर्पित कर दिया। मान सम्मानों की चकाचौंध से दूर उलझन पूर्ण परिस्थितियों में जीवन यापन करने वाली ऐसी ही महानविभूति थे पौड़ी गढ़वाल जिले के पट्टी डबरालस्यूं के गहली ग्राम में १३ नवम्बर सन् १९१२ में जन्में डॉ० शिवप्रसाद डबराल चारण। बहुमुखी प्रतिभा के धनी समर्थ लेखक डबराल ने अलनन्दा उपत्यका, उत्तराखण्ड के पशुचारक, उत्तराखण्ड के भोटांतिक, उत्तराखण्ड का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास लिखकर उत्तराखण्ड के प्रति अनन्य प्रेम को ही प्रदर्शित नहीं किया वरन् उन्होंने अपने खोजपूर्ण सृजन को साहित्य की कई विधाओं में बिखेर कर उत्तराखण्ड को अपना ऋणी बना दिया

© SHARAD

है। एक, साथ ही लेख, नाटक, कविता, कहानी, इतिहास आदि लिखकर इस मनीषी लेखक ने अपनी अनुभूति को व्यापक अभिव्यक्ति दे डाली, जिससे उनका एक बहुआयामी व्यक्तित्व समाज के सामने उभरा है। ज्ञान के इस उपासक ने प्रारम्भ मे समाज को सुरुचिपूर्ण, ओजस्वी एवं प्रेरणादायी साहित्य देने के उद्देश्य से राष्ट्रभक्तों पर काव्य, नाटक आदि प्रकाशित करने की योजना बनायी और आद्यान्त तक राष्ट्रीयता के स्वर से मुखरित गुहादिव्य, महाराणा संगामसिंह, पन्नाधाय, गोरा बादल शशांक नरेंद्र गुप्त, सिंधु विधवंस, महाराणा अमरसिंह, वीर हम्मीर, जुझारसिंह बुन्देला, चम्पतराय बुन्देला, छत्रसाल बुन्देला, सदाशिवराव भाऊ, उद्धव वैरागी, बालनाटक माला भाग–१, भाग–२ , हुतात्मा परिचय, उपाख्यान माला आदि लिखकर वीरत्व, देशप्रेम और राष्ट्रीयता से भरपूर रुधिर खौला देने वाले ओजस्वी साहित्य द्वारा हिन्दुस्तान की स्वतंत्रता, सभ्यता और संस्कृति की रक्षा के लिये अनेक दारुण यंत्रणायें सहते हुए भी निरन्तर संघर्ष करने वाली वीरों की गौरव गाथाओं, विशेषताओं को प्रकट कर युवा मन को उद्वेलित करने का प्रयत्न किया।

चारण जी ने जिस समय ऐतिहासिक नाटक लिखने प्रारम्भ किये उस समय ऐतिहासिक नाटकों की भारी कमी थी और स्वतंत्रता आन्दोलन का बोलबाला था। ऐसे समय में अपने देश और संस्कृति रक्षा की प्रबल आवश्यकता थी। जिस प्रकार जर्मन कवि अर्नड ने अपनी कविताओं द्वारा जर्मनी के प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति के वर्णन से जर्मनी मे राष्ट्रीय चेतना पैदा करने का प्रयत्न किया[३] या इटली के महान क्रन्तिकारी मेजिनी ने अपनी रचना द्वारा इटली की प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति से इटली वासियों के मन में राष्ट्रीयता जगाने का प्रयास किया था[४], उसी प्रकार राष्ट्रीय आन्दोलन की चरम परिणिति के समय डबराल ने नाटक लिखकर भारतवासियों को उनकी प्राचीन गौरवशाली संस्कृति की याद दिलायी और राष्ट्रीय चेतना की अग्नि को प्रज्जवलित करने का प्रयास किया। उनके नाटकों की प्रस्तावना देश भक्ति की भावना से ओतप्रोत थी। उस काल के समकालीन प्रश्न राष्ट्रीय चेतना को जगाने के लिये उनके नाटक भारतीयों को राजनीतिक संदेश देने तथा वीरों को जागृत करने में सफल हुये है।

'गुहादित्य' नाटक में आचार्य ने सौराष्ट्र के शासक शिलादित्य जिसकी राजधानी बल्लभी थी के शासनकाल (७वीं शताब्दी ई०) में यवनों के आक्रमण द्वारा बल्लभी के मन्दिरों को नष्ट भ्रष्ट करने, हिन्दुओं से उनकी सम्पत्ति छीनने, उनकी नारियों को अपवित्र कर दासियां बनाकर अरब के मरुस्थलों में भेजे जाने का उल्लेख कर[५] उनकी क्रूरता के इस कथन से समर्थन दिया है– "हम आपकी प्रजा

हैं महाराज भीलराज! प्रजा किसी व्यक्ति को अपना अधीश्वर बनाकर उसके हाथों मे अपनी स्वतंत्रता और अपने देश, जाति की भाग्य नौका सौंपती है कि व्यक्ति उनकी रक्षा करे और जनता के ·ाग—पौषण का ध्यान रखें[६]"।

अन्यायपूर्ण शासन और दुष्ट शासकों के दलन के लिये आक्रोश का भाव प्रकार है— "जिस राजा के राज्य में प्रजा को पेट भरने के लिये समुचित भोजन, तन ढकने के लिये यथेष्ट वस्त्र नही प्राप्त होता, धनिकों और उच्च्य पदाधिकारियों के स्वार्थ के सम्मुख निरीह प्रजा के अधिकारों का बलिदान कर दिया जाता है, वह राजा और उसके मंत्री शूली पर चढ़ाने के योग्य हैं[७]। गूह के मूख से वीरता के भाव इस प्रकार प्रकट हुये हैं—

"सिहांसन वीरों की भोग्य वस्तु है। वह किसी जाति विशेष का अपना सुरक्षित स्थान नहीं है।सिंहासन पर बैठने की कसौटी पराक्रम और साहस है[८]"। बौद्धों की अहिंसावादी नीति के कारण देश की स्वतंत्रता को खतरा उत्पन्न हो गया था। तो अहिंसा की अव्यावहारिकता, राष्ट्र के प्रति प्रेम भावना, उदात्त दृष्टि तथा राष्ट्रीय चेतना के मूल तेवर चारण ने इस तरह से उद्घाटित किये है।"अहिंसा के नाम पर अपने को और मानव समाज को धोखा देने वाले श्रमणों! तुमने सशक्त और परम पराक्रमी हिन्दू जाति को कायरता का अहिफेन पिला कर मृत और नपुंसक बना दिया है। हिन्दु जाति के सैनिक राजपूतों के हाथ से खड्ग दूर फिंकवा कर तुमने भिक्षा पात्र ग्रहण करवाया है। रणकौशल और वीरत्व का पाठ भुला कर उन्हें भिक्षा याचन का मंत्र सिखाया है। रणांगण के शिविरों में शस्त्र शैय्या पर शयन करना छुड़ा कर उन्हें संघारामों और विहारों में विहार करना बतलाया है। जो वीर शरीर प्रतिक्षण, अभेद्य, लौह कवचों से आछन्न रहते थे उन पर तुमने चीवर काषाय लपेटा है। श्रमणों !तुम्हारी अहिंसा हिन्दुस्तान को रसातल पहुंचा देगी[९]।

डा० डबराल ने इस नाटक के माध्यम से मातृभूमि की स्वतंत्रता, सभ्यता व संस्कृति के रक्षार्थ चिता में कूदने वाली शिलादित्य की महारानी विद्यावती के त्याग, बलिदान व स्वदेश प्रेम को भारतीयों के सामने रखा ताकि उनके आदर्शों को देश के स्वातंत्र्य संघर्ष में अपना सकें—

युग युगान्तर तक अमर रहेगी दारुण करुण कहानी।।
विश्व गगन रोयेंगे सुन कर आज हिन्दू वाणी।।
लक्ष—लक्ष हिन्दू अबलायें बिकी दासियां बन कर।।

टके–टके में हिन्दू बालक हाय बिक गये घर–घर ।।

लक्ष–लक्ष ने अग्निकुण्ड में जल कर रक्षा पायी।।

लक्ष–लक्ष ने पत्नी, पुत्री, भगिनी वध निज कर से।।

किया! लक्ष–लक्ष ने पिला हलाहल, हां! यवनों के डर से।।

भूल न जाना भावी भारत! दारुण करुण कहानी[१०]।।

अपने पिता शिलादित्य की बल्लभी नगर का यवनों द्वारा विध्वंस देख कर गुह का रक्त खौलने लगता है। बाहुदण्ड फड़कने लगते है। भौंहे चढ़ जाती है। और जिह्वा आततायियों के रुधिर पान करने के लिये तड़पती हैं[११]।

"गोरा बादल' नाटक में वीर शिरोमणि गोरा बादल के महान त्याग, असीम वीरत्व और अपार देशभक्ति की गाथा को दर्शाते हुये भारत के नवयुवकों को गोरा बादल के समान देश की स्वतन्त्रता तथा धर्म, संस्कृति की रक्षा के लिये अपना सर्वस्व बलिदान करने के प्रेरणा दी है।वीर रस की प्रधानता से मुखरित स्वर देखिये–

सिन्धु वक्ष पर निर्वासित हिन्दू ने सेतु बनाया।

काबुल कंदहार पर हिन्दू जय केतु उठाया।।

चन्द्रगुप्त हिन्दू ने वसुधा विजयी गर्व मिटाया।

तेहरान से बाली द्वीप तक हिन्दू ध्वज लहराया।।

सिन्धु लोल लहरों ने गायी हिन्दू कीर्ति कहानी।

बहुत सो चुका, बहुत खो चुका उठ–उठ हिन्दूमानी[१२]।।

विभिन्न विदेशी शक्तियों के अनवरत् आक्रमणों एवं दबाव के बीच भारतीय संस्कृति अपनी प्रबल जीवनी शक्ति से अडिग बनी रही, लेकिन भारतीय संस्कृति की इस जीवन्तता के बावजूद उसके उत्थान के साथ पतन के युग भी आते है। ऐसी स्थिति मे यवनों से संघर्षरत रहने का आह्वान किया है। यद्यपि चारण ने गांधी की अहिंसावादी नीति का संदेश दिया है, लेकिन स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये संघर्ष को भी समर्थन दिया है। शस्त्र व शास्त्र मर्यादा की रक्षा के लिये वे अहिंसा व दया का परित्याग करने की सीख देते है।

हिन्दू जाति को आज शत्रु संकट ने घेरा आकर।
यवन वाहिनी उमड़ आ रही उत्पात मचा कर।।
उठो बद्ध कटि खड्ग हाथ ले, हिंसा, दया शिथिलता त्यागो।
भूल अहिंसा, हिंसा बरतो खल से, भीत न भागो।
धर्म, देश स्वातंत्र्य हेतु दो लक्ष–लक्ष कुर्बानी।
बहुत सो चुका बहुतो खो चुका उठ–उठ हिन्दूमानी[13]।।

रतनसेना के वीर गति को प्राप्त होने पर मेवाड़ की पद्मिनी का विधर्मियों के हाथ पड़ने की अपेक्षा अपनी सेविकाओं के साथ अग्नि चिता में भस्म होने से बहिनों व पुत्रियों में त्याग, आत्मा बलिदान, ज्वाला के समान अत्याचार प्रतिकार की शक्ति बनने की प्रेरणा के साथ ही स्त्री की मर्यादा और आत्म सम्मान को भी स्पष्ट किया है।

मग्न नारियों के जलूस लख सूर्यदेव शरमाया।।
आततायियों के मन में पर लज्जा भाव न आया।।
लक्ष–लक्ष ने अग्नि अंक में अपनी लाज बचायी।
लक्ष–लक्ष ने सरिता जल में गिर कर रक्षा पायी।।
भूल न जाना हिन्दू सतियों की महान कुर्बानी।
लक्ष–लक्ष ने लज्जा रखी निज कर खड्ग उठाकर।।
अपने कर से पुत्र–पुत्रियां, भागिन नारि मिटा कर।
लक्ष–लक्ष वरवश वैश्या बन पड़ी यवन बन्धन में।।
नरक, ताप, संतप्त, व्यथित, रुग्णा व्याकुल अति मन में।
भूल न जाना जौहर वाली यह मेवाड़ महाराणी [14]।।

नाटककार नारी को देशभक्ति को भी उजागर करने में सफल हुआ है। बादल की माता कृष्णा तथा पत्नी समुद्रा भी वीर प्रसूता हिन्दू माता तथा पत्नी होकर बादल को कर्त्तव्यपथ से विचलित न करते हुये समरांगण भूमि मे जाने को प्रेरित करती है।नाटककार पर भगवतगीता की "हतो वा

प्रापस्यसि स्वर्ग जित्वा वा भोक्ष्यसेमहीम" उक्ति का भी प्रभाव देखा जा सकता है–

जाओ–जाओ रण में वीर।
जाओ आना शत्रु सैन्य को प्रखर खड्ग से चीर।।
वक्षस्थल हो विद्ध तुम्हारा, हो न पीठ पर घाव।
शत्रु सिन्धु को देख उमड़ता, बढ़ लहर सा चाव।।
सुरगण, सुमन बखेरे नभ से देख तुम्हे रणधीर।
मृत होने पर वीर लोक हैं जीवित भूतल भोग।।
धर्म, देश स्वातंत्र्य हेतु तन तजने में क्या शोक[१५]।

इस ऐतिहासिक नाटक में यवनों के अत्याचारों से त्रस्त राष्ट्र के प्रति मर मिटने तथा प्रतिशोध का भाव इन शब्दों में अभिव्यक्त है–

"अबलाओं पर अत्याचार करने वाले यवनों! स्मरण रखों जब तक एक भी हिन्दू के शरीर में प्राण है तब तक तुम्हारे अत्याचारों का प्रतिशोध लिया जायेगा। इस पवित्र भारत भूमि मे आकर यवन आततायियों। तुमने भोली भाली शांति प्रिय हिन्दू जाति के ऊपर जो अत्याचार ढाये हैं उनका प्रतिकार होगा और अवश्यय होगा[१६]।"

अजपाल की पुत्री गौरी प्रेमपाश में बंधे महाराणा संगामसिंह को सल्तनतकालीन लोदी वंश के शासक सिकन्दर लोदी के कुकृत्यों से आक्रान्त भूमि को छुटकारा दिलाने तथा समाज को एकता के सूत्र में बांधने के लिये दिये वीरता एवं उत्साह भाव को जगाने के शब्द इन पंक्तियों में द्रष्टव्य है–

क्यों भूल प्रेम प्रपंचों में, उठ हिन्दू! खड्ग उठा अपना।
क्यों सोया कायर प्रपंचों मे, उठ हिन्दू खड्ग उठा अपना।।
मिटता है नाम तुम्हारा अब, लुटता है देश तुम्हारा अब।
यवनों का नाश हुआ घर–घर , क्यों भूला भोले धन्धों में।।
उठ हिन्दू! खड्ग उठा अपना, कटती चुटियां अब हैं बरवश।
लुटते मन्दिर, मठ , धन सर्वस, कटती गौ, हरती है अबला, ।।
तू फंसा दासता फन्दों में, उठ हिन्दू खड्ग उठा अपना[१७]।

पातिव्रत, देशभक्ति, वीरत्व और त्याग की दृष्टि से हिन्दू नारियां संसार की समस्त नारियों में अग्रगण्य रही है। 'पन्ना धाय' नामक नाटक में शिशोदिया कुल के वंश धर की रक्षा के लिये अपने पुत्र की बलि अर्पित करने वाली पन्ना धाय के त्याग का उदाहरण संसार में दूसरे नहीं है। लेखक ने इस नाटक में पन्ना धाय द्वारा पुत्र की मृत्यु पर गाये गये शोक गीत के माध्यम से भी रक्षा का भाव इस प्रकार उजागर किया है–

शोक–अश्रु! मत छलको
रोके रहो विषम पीड़ा को धीरज धर कर पल को
हृदय सिंधु हो शांत थाम ले लहरों की हलचल को
दुःख सरिता! मत उमड़ रोक ले कल–कल को, निज जल को
रहने दो परमार्थ–दुग्ध को, फेंको स्वार्थ सलिल को,
भेंट चढ़ा दो तन मन धन, लख देश–धर्म मंगल को[१८] ।।

इसी नाटक मे वीरों के अन्दर उत्साह, वीरत्व एवं रुधिर खौला देने वाले ओजस्वी भावों को परिलक्षित करने में डबराल सफल हुए है[१९]।

इस नाटक द्वारा डबराल का मुख्य उद्देश्य समाज को कर्त्तव्य–परायणता, बलिदान तथा समर्पण की ओर अग्रसर करना था क्योंकि उस समय देश को स्थायी और बलिदानी वीरों की नितान्त आवश्यता थी। राजस्थानी वीरों की संघर्ष गाथा को उजागर करने वाले 'हीरोल' नाटक में वीर अमरसिंह को हिन्दू जाति की रक्षा करने तथा देश के प्रति प्रेम प्रकट कर चारण युवकों के अन्दर कर्त्तव्य बोध की भावना को भरने में सफल हुये[२०]।

डबराल ने साहित्य द्वारा राष्ट्रीय संस्कार दिए जिससे राष्ट्रीय व्यक्तित्व का निर्माण सम्भव है। देश के लिए सर्वस्व न्यौछवार करने की भावना से ही राष्ट्रीय व्यक्तित्व बनता है[२१]।

" जुझार सिहं बुन्देला" नामक ऐतिहासिक नाटक मध्यकालीन भारत के मुगलवंशीय बादशाहों के अमानवीय अत्याचारों के विरुद्ध बुन्देलखण्डी रण शूरमाओं की संघर्षमयी शौर्य गाथा का गुणगान करता हुआ, औरछा नरेश जुझारसिंह के मातृभूमि के प्रति उत्कट प्रेम को दर्शाता हुआ विशिष्ट सैनिक वीर परम्परा को उजागर करता है[२२]।

साहित्य की एक विधा कविता है। एक कवि के रुप में डबराल ने 'अतीत स्मृति', 'बुदबुद' 'महाश्वेता' पुण्डरीक, 'संघर्ष संगीत' तथा "वीर अन्त्याक्षरी आदि कविताओं की रचना की। 'अतीत स्मृति' काव्य में कवि ने हिमालय से, सिंधु से, सारनाथ से आदि लम्बी–लम्बी कवितायें प्रकाशित की हैं। उनकी रचनाओं ने सोयी हुयी भारतीय जनता को जागृत किया। उन्हें अपने अधिकारों का ज्ञान कराया और साहस के साथ विदेशियों से लड़ने की चेतावनी दी। उनकी राष्ट्रीय चेतना के मूल में भारतीय संस्कृति के प्रति अगाध निष्ठा और भारत देश के प्रति अगाध भक्ति का स्वर ही प्रधान था। 'हिमालय से' नामक सम्पूर्ण कविता में उत्साहमूलक वीर रस की अभिव्यंजना हुयी है। इसमें कवि ने सल्तनत तथा मुगलकालीन आततायियों के आक्रमणों, जघन्य कृत्यों का उल्लेख कर देश के नौजवानों को हिमालय जैसा अभेद्य बनने का परामर्श दिया है[२३]। 'सिंधु से' नामक कविता में वीर रस का सुन्दर उदाहरण देते हुए समुद्र को एक वीर योद्धा के रूप में दिखा कर राष्ट्रहित में उसका अनुकरण आवश्यक माना है[२४]। भारत का इतिहास युवाओं द्वारा राष्ट्र हित के लिये किये गये त्याग और बलिदान की गाथाओं से ओत–प्रोत है। प्राचीन भारतीय इतिहास में राम–युधिष्ठर, बुद्ध के नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है। स्मृति अलंकार के माध्यम से अतीत के इतिहास को याद कर नवयुवकों का हृदय राष्ट्रीयता की ओर उन्मुख करने में डबराल सफल रहे[२५]।

'बुदबुद' नामक काव्य रचना में सौन्दर्य के साथ–साथ देश के प्रति भारतीय जनता को भीरुता से उबारने, मानव की अलसायी चेतना जगाने, भय को त्यागने, विघ्न बाधाओं का सामना करने और निर्भीकता से आगे बढ़ने की सीख दी है–

उठ जा मरे मनुष्य सोम पी कर दे मृत्यु बन्धन का क्षय
बाधाओं का मस्तक दल कर करता जा तू अविरल जय
इस रमणीक जगत उपवन में जीवन फल से क्यों डरता?
मत डर ज्वाला से पावक की, मत कर रवि किरणों से भय[२६]।

अतीत की गौरव गाथाओं का गान भविष्य को भी अपने रंग में रंग देने में समर्थ होता है। हमारे पूर्वजों द्वारा देश और धर्म के रक्षा की लिये दी गयी प्राणों की आहुति का स्मरण करने से कायर पुरुषों की धमनियों में भी रक्त का तीव्रवेग से संचार होने लगता है और अकर्मण्य भी कर्मवीर बन कर, भीरु भी खड्ग उठा कर रण में दौड़ने लगता है। ऐसा ही उद्‌बोधन हुआ है, चारण के 'संघर्ष

संगीत' काव्य संग्रह में[२७,२८]। राष्ट्रोत्थान तथा शत्रुदल से लोहा लेने के लिये दुर्व्यसनों को त्यागने का संदेश लेखक ने अपने साहित्य में दिया हैं[२६]। देश के लिये मर मिटने की बलिदानी भावना और राष्ट्रीय अनुशासन का दूसरा भाग मनोबल है। ये भाव उत्पन्न करने के लिए इतिहास को एक लम्बी परम्परा की आवश्यकता है। भारत में यह परम्परा हिन्दुत्व की भावना से ही प्राप्त की जा सकती है। डा० शिवप्रसाद डबराल का व्यक्तित्व विशुद्ध हिन्दुत्व से ओत–प्रोत था। वे हिन्दुत्व के परम पोषक थे। उन्होंने अपने नाटकों और कविताओं में हिन्दुत्व की रक्षा के लिये आह्वान किया है जिसे यवन मिटाना चाहते थे। वे हिन्दुत्व के रक्षार्थ अहिंसा त्यागने व हिंसा बरतने के भी पक्षपाती थे। हिन्दू धर्म से आप्लावित 'उठ–उठ हिन्दू मानी' कविता में यह भाव प्रदर्शित है– देश की रक्षार्थ वीर सपूतों के अन्दर जोशीला भाव भरने के लिये चारण ने इन पंक्तियों का उद्‌बोधन किया है–

आज वीरता दिखलाओं वह, जिससे दिग्गज कांप उठे।
आज धीरता दिखलाओं वह जिससे पर्वत कांप उठे।।

'हुतात्मा परिचय' नामक पुस्तक में डबराल ने प्रत्येक भारतीय को जहां आज अपने राष्ट्र की स्वतंत्रता की रक्षा हेतु अपना सर्वस्व बलिदान करने के लिये कहा वहीं दूसरी ओर पराधीनता के तथ्यों को भी उजागर किया है। तन, मन, धन, सभ्यता, व संस्कृति की दृष्टि से कुछ खोने की बात भी कहते है। लेखक ने उन लाख–लाख हुतात्माओं (बलिदानी वीरों) की पावन स्मृति को उजागर किया है जो अपने जीवन की उठती, उभरती व खिलती नवयौवन की सुकुमार कलियों को राष्ट्रीयता के लिये अपने ही हाथों से मसल कर अर्ध्य चढ़ा गये, इसमें ऐसी घटनाओं को उभारा गया है जो पुरानी हैं, उन शहीदों की गाथायें है जो अपने देशके लिये अर्पित हो गये। ऐसे हुतात्माओं का जिक्र किया गया है, जिन्होंने सल्तनत और मुगलकाल में अपने पराक्रमी शौर्य से देश की रक्षा करते–करते प्राणों की आहुति दे दी। ऐसे वीरों में राजस्थानी वीरों(महाराणा रतनसिंह, संग्रामसिंह, उदयसिंह,प्रतापसिहं अमर सिंह) बुन्देले वीरों में (जुझारसिंह बुन्देल, वीरसिंह) महाराष्ट्री वीरों (शाहजी भोंसले, शिवाजी, सम्भाजी), पंजाबी वीरों (गुरु गोविन्द सिंह, वैरागी बुन्देला, वीरसिंह) आदि की गौरव गाथाओं से चारण जी ने अतीत को उजागर कर वर्तमान के लिये मार्ग प्रशस्त किया[३०]।

डा० डबराल का बाल साहित्य भी कम रोचक नहीं है। उच्च कोटि का यह साहित्य पौराणिक और ऐतिहासिक नींव पर खड़ा है। इस साहित्य में आदर्श मर्यादा, भारतीय आध्यात्मिकता के द्वारा बाल मन पर वीरता की भावना को कूट–कूट कर भरने का प्रयत्न किया गया है। न केवल देश के

लिये बल्कि धर्म और जाति की रक्षा के लिए मर मिटने का अमर संदेश दिया गया है–

धर्म, जाति या दशे हेतु जो मरते समरांगण में।
वीर शिरोमणि वे पड़ते हैं, कभी न पड़ते यम बन्धन में।
वीर लोक मिलता है उनको, जो मुनियों को भी दुर्लभ[३१]।

'वीर अन्त्याक्षरी' नामक बाल काव्य में सन् १९६५ के भारत–पाक युद्ध का वर्णन हुआ है। चारण ने इसमें लिखा है "भारत और पाक दोनों देशों का हित अच्छे पड़ोसी बन कर रहने में है किन्तु यह तब हो सकता हैं जब पाकिस्तान की वर्तमान पीढ़ी जिसने घृणा का विष उगल कर देश का विभाजन किया है तथा उसके द्वारा स्थापित परम्परायें दोनों लुप्त हो जाये। जब तक ऐसा नहीं होता तब तक भारत के बच्चे–बच्चे को निरन्तर देश को रक्षा के लिए प्रस्तुत पड़ेगा[३२]। "वीर रस से भरे' अन्त्याक्षरी काव्य को लिखने का लक्ष्य बच्चों में उत्साह, देश प्रेम, साहस, बलिदान की भावना को भरना है जैसा कि कवि ने काव्य के प्रारम्भ में लिखा है कि "वीर रस से भरी अन्त्याक्षरी के द्वारा हम अपने बच्चों में उत्साह, साहस, देश प्रेम और बलिदान की भावनायें भर सकते है। जिन वीरों ने वर्तमान युद्ध में प्राणों की चिन्ता न करके भारत की रक्षा की है और विश्व की दृष्टि में उसकी प्रतिष्ठा बढ़ायी है उन वीरों की गाथा से प्रत्येक बच्चे को परिचित होना आवश्यक है। समाज में आज इस प्रकार के साहित्य की भारी कमी है, कवि श्रेष्ठ ने इस कमी को पूरा करने का प्रयास किया है तथा हिन्दी के प्रत्येक अक्षर पर पांच–पांच कवितायें बनायी है। अ, ओ, घ, द, ह, ह, ज्ञ, अक्षरों से प्रारम्भ कविताओं में सौन्दर्यबौद्ध और बीररस को समुचित स्थान मिला है। उनकी इस कविता में प्रगतिशीलता, जनतांत्रिक मूल्यों के प्रति विश्वास और राजनीतिक संचेतना के दर्शन होते है। युद्ध भूमि में कभी पीठ न दिखलाने वाले तरुणों के लिये राष्ट्रहित पहले है प्राण बाद में है। मातृभूमि के प्रति इसी अमिट प्रेम को छलकाती डबराल की दृष्टि –

दीपशिखा सा जला–जला कर तन जीवन को अपने ।
देश सुरक्षित रखता हो साकार तुम्हारे सपने।।
उसे हिन्द का कण–कण प्यारा कौन पराया उसको?
देश हेतु निज रक्त बहाता रक्त दान दो उसकों[३३]।

डबराल के हृदय में करुणा, दया, उदारता, परोपकार, स्वदेश प्रेम, स्वधर्म आदि विशेषतायें पायी जाती है। उन्होंने ने स्वदेश चिन्तन व राष्ट्रीयता की भावनाओं के विभिन्न रूपों की अभिव्यक्ति की है। वे देश को कृषि के द्वारा आत्मनिर्भर बनाने की भावना से लिखते है:–

फल उपजायें गांव–गांव में, पौधे कई लगावें,
छत आँगन, घर बाग, बगीचे सब्जी से भर जावें,
तिल – तिल से धरती के भोजन अपने आप उगाना
युद्ध क्षेत्र में खाद्य क्षेत्र में विजयी देश बनाना[३४]।।

डबराल सच्चे अर्थों में स्वदेश प्रेमी साहित्यकार थे। उनका स्वदेश प्रेम उदात्त है। उनके वीर काव्यों में उफनता उत्साह है। क्रान्ति की ज्वाला धधकती हुयी दिखाई देती है। उनका सम्पूर्ण साहित्यिकी जीवन सृजन, जातीय गौरव, राष्ट्र प्रेम , आदर्श भावना, सद्चरित्र के लिये है। इन्हीं वीर चरित्रों के प्रति गौरव प्रदर्शित करते हुये समाज में आशावाद का संचार उनका उद्देश्य रहा। इस प्रकार आचार्य की साहित्यिक विधाओं की उपलब्धियाँ उत्तराखण्ड ही नहीं बल्कि भारत के लिये भी वरदान हैं। उनका समग्र लेखन एक प्रतिभाशाली कृतिकार का परिचय देता है। प्रत्येक क्षेत्र में लिखित उनकी कृतियां मौलिक और अद्वितीय हैं। जब हमारा पहाड़ अपनी संस्कृति के प्रति निश्चेष्ट हो गया था, तब आचार्य ने यहां की संस्कृति व इतिहास के प्रति स्वतंत्र धारणायें बना कर समाज में जन– जागरण किया। इस कृत्य के लिये डबराल का संघर्षपूर्ण जीवन उनकी नियति और शक्ति बना।

१. ए० के० सिन्हा–ए हिस्ट्री ऑफ इंडिया कलकत्ता, १९७३ पृ० १३
२. लिटरेचर एण्ड लाइफ– ए कलेक्शन ऑफ राइटिंग्स गोर्की, १९४७ पृ० ६६
३. राबर्ट इरगांग– यूरोप सिन्स वाटरलू, यू० एस० ए० १९६७ पृ०४१
४. गीता श्रीवास्तव– मेजिनी एण्ड हिज इम्पैक्ट ऑन इंडियन नेशनल मूवमेंट, इलाहाबाद, १९८२
५. शिवा प्रसाद डबराल– गुहदित्य– दोगड्डा पृ०२८,२९
६. पुर्वोक्त पृ०१२
७. पूर्वोक्त पृ०१३
८. पूर्वोक्त पृ०१६
९. पूर्वोक्त पृ०२३, २४

१०. पूर्वोक्त पृ० २८

११. पूर्वोक्त पृ० ३१

१२. पूर्वोक्त पृ०१८

१३. पूर्वोक्त पृ १६

१४. पूर्वोक्त पृ० ५६

१५. पूर्वोक्त पृ० ४५

१६. पूर्वोक्त पृ० ११

१७. पूर्वोक्त पृ० ३६

१८. शिव प्रसाद डबराल पन्ना धाय दोगड्डा पृ० ८४

१६. पूर्वोक्त पृ० १०७, १०८

२० हीरोल पृ० १७

२१, पूर्वोक्त पृ० ०८

२२. शिवप्रसाद डबराल जुझारसिंह बुन्देल दोगड्डा पृ० १८

२३. शिवप्रसाद डबराल अतीत–स्मृति दोगड्डा पृ० ०७

२४. पूर्वोक्त पृ० १८

२५. पूवोक्त पृ० २३

२६ शिवप्रसाद डबराल बुदबुद दोगड्डा पृ० ०६

२७ शिवप्रसाद डबराल संघर्ष संगीत दोगड्डा पृ० ०६

२८ पूर्वोक्त पृ० १०

२६ पूर्वोक्त पृ० ११

३० शिव प्रसाद डबराल, हुताम्ता परिचय, पृ० १०–१३

३१ शिवप्रसाद डबराल वीर अन्त्याक्षरी दोगड्डा पृ० ०२

३२ पूर्वोत पृ० ०२

३३ पूर्वोत पृ० ३२

३४ पूर्वोत पृ० ४८